Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1s
January 2025
ISSN 2229-3388

स्नातक स्तर के विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के राजनीतिक सामाजीकरण का तुलनात्मक अध्ययन

[1]संगीता महरवाल, [2]डॉ. भारती विजय

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

[2]शोध पर्यवेक्षिका (एसोसिएट प्रोफेसर) , शिक्षा विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

शोध सार

राजनीतिक सामाजीकरण एक प्रमुख प्रभावी प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों को राजनीतिक सामाजीकरण के विभिन्न एजेंटों के साथ बातचीत के माध्यम से अपनी राजनीतिक दुनिया को समझने में सक्षम बनाती है। इसके अतिरिक्त राजनीतिक सामाजीकरण विद्यार्थियों को कई राजनीतिक मामलों के संबंध में विवेक को नियंत्रित करना सीखाता है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य स्नातक स्तर के विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के राजनीतिक सामाजीकरण का तुलनात्मक अध्ययन करना हैं। शोध में शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। प्रस्तुत शोध के लिए न्यादर्श के रूप में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के व्यावसायिक पाठ्यक्रम में संलग्न महाविद्यालय जिसमें सरकारी एवं निजी क्षेत्र के महाविद्यालय एवं इसमें प्रत्येक क्षेत्र से 50 विद्यार्थियों को जिसमें 25 छात्र एवं 25 छात्राएं सम्मिलित होगी। महाविद्यालय के दो क्षेत्र कानून एवं पॉलेटेक्निक के विद्यार्थियों को न्यादर्शन के लिए लिया गया है। न्यादर्शन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु दत्त संकलन का कार्य स्वयं पर्यवेक्षक के निर्देशन में राजनीतिक सामाजीकरण के स्वनिर्मित परीक्षण द्वारा किया गया। निष्कर्ष में ज्ञात हंआ कि राजनीतिक सामाजीकरण में लिंग भेद के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की भिन्नता के आधार पर राजनीतिक सामाजीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

मुख्य शब्द :– राजनीतिक सामाजीकरण, व्यावसायिक पाठ्यक्रम, स्नातक स्तर, कानून, पॉलेटेक्निक प्रशिक्षणार्थी।

1. प्रस्तावना

मानव शिशु एक जैविक जीव के रूप में दुनिया में आता है जिसमें पशु जैसी प्रवृति होती है। सामाजिक सीखने की प्रक्रिया के जरिए उसे धीरे–धीरे एक सामाजिक प्राणी के रूप में ढाला जाता है। दूसरे शब्दों में, इस प्रक्रिया के जरिए लोग समाज की संस्कृति सीखते हैं और उस समाज में पूर्ण भागीदार बन जाते हैं। इस ढलाई की प्रक्रिया के बिना जिसे 'समाजीकरण' कहा जाता है, समाज एक पीढ़ी से अधिक समय तक नहीं चल सकता था और संस्कृति की उत्पत्ति सहीं मायने में नहीं हो पाती। सामाजीकरण की प्रक्रिया पर बच्चा कैसे प्रतिक्रिया करता है, यह पिछली परिस्थितियों के साथ–साथ वर्तमान परिस्थितियों के प्रभाव पर निर्भर करता है। इस प्रक्रिया में परिवार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यही कारण है कि ज्यादातर बच्चे अपने माता–पिता के धर्म जैसी विश्वास प्रणालियों का पालन करते हैं। सामाजीकरण वयस्कता में भी जारी रहता है, जिसमें वयस्क अपने सामाजीकरण में और भी ज्यादा सक्रिय भूमिका निभाते हैं। यह वह प्रक्रिया है जिसके जरिए असहाय शिशु धीरे–धीरे एक आत्म–जागरूक, जानकार व्यक्ति बन जाता है, जो उस संस्कृति के अनुसार जीवन व्यतीत करने में कुशल होता है जिसमें वह पैदा हुआ है।

एक सामाजिक प्राणी होने के नाते हम एक दूसरे से अपने परिवेश में होने वाली घटनाओं का अर्थ सीखते हैं, हम स्पष्ट नियम और अंतर्निहित मानदंड सीखते हैं। हम लोगों और घटनाओं के बारे में राय और दृष्टिकोण बनाते हैं। हम उनके सही या गलत होने का न्याय करना सीखते हैं। ''वह प्रक्रिया जिसके द्वारा कोई व्यक्ति सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण व्यवहार का संग्रह सीखता है, उसे सामाजीकरण कहते हैं।'' सीखने की यह प्रक्रिया केवल जीवन के शुरुआती वर्षों तक ही सीमित नहीं है। इस प्रक्रिया में मनुष्य जीवन भर सीखता है। यह सामाजीकरण ही है जो बच्चे को समाज का उपयोगी सदस्य बनाता है और उसे सामाजिक परिपक्वता प्रदान करता है।

दूसरी ओर, राजनीतिक सामाजीकरण सीखने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके द्वारा एक अच्छी तरह से चलने वाली राजनीतिक व्यवस्था के रूप और व्यवहार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होते हैं। पाई और वर्बा का मत है, 'किसी समाज की राजनीतिक संस्कृति में अनुभवजन्य विश्वासों, अभिव्यंजक प्रतीकों और मूल्यों की प्रणाली शामिल होती है जो उस स्थिति को परिभाषित करती है जिसमें राजनीतिक कार्यवाही होती है''। इसके फलस्वरुप, राजनीतिक संस्कृति, राजनीतिक सामाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से कायम रहती है, जिसके तहत बच्चों के वयस्क होने पर राजनीतिक दृष्टिकोण और मूल्य विकसित होते हैं और वयस्कों को नई भूमिकाएँ सौंपी जाती हैं।

राजनीतिक सामाजीकरण एक राष्ट्र की राजनीतिक संस्कृति को प्रसारित करता है। या, शायद, यह कहना अधिक उचित होगा कि यह लोगों की राजनीतिक संस्कृति को **बनाए रखता है, बदलता है और कभी–कभी बनाता भी है।** हालाँकि, राजनीतिक सामाजीकरण की ये तीन

भूमिकाएँ कई कारकों पर निर्भर करती हैं जैसे कि देश का ऐतिहासिक विकास, सामाजिक और अंतर्राष्ट्रीय वातावरण का प्रकार, राजनीतिक जीवन के प्रति मौजूदा पारंपरिक दृष्टिकोण का चरित्र और नेताओं और नागरिकों के लक्ष्य और साधन आदि।

राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया काफी हद तक राजनीतिक संस्कृति के रखरखाव पर निर्भर करती है। राजनीतिक सामाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से ही व्यक्ति राजनीतिक संस्कृति सीखता है और राजनीतिक उद्देश्यों के प्रति उसका रुझान बनता है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य व्यक्तियों को इस तरह से प्रशिक्षित या विकसित करना है कि वे एक राजनीतिक समुदाय के अच्छे से काम करने वाले सदस्य बन सकें। दूसरे शब्दों में, राजनीतिक सामाजीकरण व्यक्तियों के मन में मूल्यों, मानदंडों और झुकावों का क्रमिक समावेश है ताकि वे राजनीतिक व्यवस्था में विश्वास विकसित करें और इस तरह खुद को अच्छे काम करने वाले नागरिक के रूप में बनाए रखें और अपने उत्तराधिकारियों के मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ें।

अध्ययन के दृष्टिकोण से राजनीतिक सामाजीकरण के क्षेत्र को प्लेटो से लेकर रूसो तक और 1920 और 1930 के दशक में नागरिक शिक्षा के अमेरिकी अध्ययनों में लगभग हर युग के राजनीतिक सिद्धांत में प्रत्याशित किया गया है। हालाँकि, जब लिपसेट और अन्य विद्वानों ने मतदान व्यवहार के संबंध में अवधारणा का विश्लेषण किया, तो अनुभवजन्य रूप से उन्मुख राजनीतिक–व्यवहार साहित्य में इसका प्रवेश कुछ हद तक विलंबित था। 1950 के दशक के अंत और 1960 के दशक की शुरुआत में इस क्षेत्र में अनुसंधान अचानक बढ़ने लगा। और तब से अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य ज्यामितीय दर से बढ़ा है, जिसके परिणामस्वरूप हाल ही में कई ग्रंथों और पाठकों का प्रकाशन हुआ है।

ऐसे अधिकांश अध्ययनों ने व्यवहारवादियों को यह विश्लेषण करने के लिए प्रेरित किया कि समाज द्वारा व्यक्ति में राजनीतिक अभिविन्यास कैसे स्थापित किए जाते हैं? लेखकों और विद्वानों के अनुसार, उनके मौलिक राजनीतिक रुझान किसी भी समाज में व्यक्ति के राजनीतिक व्यक्तित्व को निर्धारित करने में मदद करते है। उस अवधि के बाद से, राजनीतिक सामाजीकरण के विभिन्न पहलुओं पर शोध आउटपुट और प्रकाशन दुनिया भर में स्थिर दर से बढ़े हैं।राजनीतिक सामाजीकरण की सामग्री तीन व्यापक श्रेणियों अर्थात् राजनीतिक व्यवस्था से लगाव, पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण और राजनीतिक भागीदारी में आती है। यहाँ उपरोक्त प्रत्येक श्रेणी का संक्षिप्त संदर्भ देना आवश्यक है। लगाव को आम तौर पर राजनीतिक व्यवस्था या 'शासन' की संस्थाओं, संरचनाओं और मानदंडों पर ध्यान केंद्रित करने के रूप में परिभाषित किया जाता है। दूसरी ओर, पक्षपात वर्तमान सत्ताधारी 'अधिकारिया' और अन्य व्यक्तियों, समूहों, नीतिगत रुख और विचारधाराओं पर ध्यान केंद्रित करता है, जो सत्ता और प्रभावों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। राजनीतिक भागीदारी में नागरिकों का राजनीतिक व्यवहार और आचरण शामिल होता है।

उपर्युक्त दृष्टिकोणों के आधार पर, यह माना गया है कि राजनीतिक सामाजीकरण की प्रक्रिया व्यक्ति के जीवन भर चलती रहती है। व्यक्ति राजनीतिक सामाजीकरण प्रक्रिया के माध्यम से राजनीतिक रुझान और स्वभाव सीखता है। उनके राजनीति सीखने के रूप प्रकट या अव्यक्त हो सकते हैं। प्रकट राजनीतिक सामाजीकरण उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसमें प्रेषित जानकारी, मूल्य या भावनाओं की सामग्री स्पष्ट रूप से राजनीतिक होती है। अव्यक्त राजनीतिक सामाजीकरण पारस्परिक हस्तांतरण, प्रशिक्षुता और सामान्यीकरण के माध्यम से हो सकता है। हालाँकि, यह एक सतत प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य व्यक्तियों को एक राजनीतिक समुदाय के अच्छी तरह से काम करने वाले सदस्य बनने के लिए प्रशिक्षित या विकसित करना है। दूसरे शब्दों में, राजनीतिक सामाजीकरण वह विकासात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक बच्चा एक नागरिक के रूप में विकसित होता है और राजनीतिक अभिविन्यास प्राप्त करता है। राजनीतिक सामाजीकरण की प्रक्रिया परिवार, सहकर्मी समूहों, शैक्षणिक संस्थानों, माध्यमिक समूहों, मास मीडिया और कार्यस्थल जैसे विभिन्न एजेंटों के माध्यम से प्रभावित होती है। उपरोक्त एजेंटों में, परिवार सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह राजनीतिक विश्वासों की नींव रखता है। सहकर्मी समूहों को अपने सदस्यों से बहुत अधिक ध्यान मिलता है जो स्वाभाविक रूप से राजनीतिक सामाजीकरण के एजेंट के रूप में इसकी ताकत को बढ़ाता है। दूसरी ओर, शैक्षणिक संस्थान लोगों को कुछ बुनियादी मूल्यों से अवगत कराते हैं और उन्हें ईमानदारी, अनुशासन, नियमितता आदि जैसे कुछ गुणों को आत्मसात करने में मदद करते हैं। इसके अलावा, शैक्षणिक संस्थानों की गतिविधियों और प्रशासन में भागीदारी छात्रों को भविष्य में देश के प्रशासन को संभालने में मदद करती है।

द्वितीयक समूह, जैसे राजनीतिक दल और राजनीतिक समूह राजनीतिक दुनिया में संबंधों से निपटने के लिए बहुत अच्छी जानकारी प्रदान करते हैं। मास मीडिया – रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और इसी तरह के अन्य माध्यम बहुत सारी राजनीतिक जानकारी प्रदान करते हैं और अक्सर वे जो जानकारी देते हैं उसकी अपनी व्याख्या भी जोड़ते हैं और इसलिए राजनीतिक सामाजीकरण में उनकी भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। कार्यस्थल पर प्राप्त अनुभव भी राजनीतिक अभिविन्यास को आकार देने में मदद करता है। ये राजनीतिक समाजीकरणकर्ता राजनीतिक अभिविन्यास को स्पष्ट रूप से या परोक्ष रूप से जानबूझकर या अनजाने में प्रसारित करते हैं और इस प्रकार, व्यक्ति के अभिविन्यास और स्वभाव के निर्माण में बहुत योगदान देते हैं।

2. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

गुप्ता, सुमन और रानी, सीमा (2023) ने शहरी और ग्रामीण उच्च शिक्षा के छात्रों के बीच राजनीतिक सामाजीकरण पैटर्न के विश्लेषण विषय पर एक शोध पत्र लिखा। इस पेपर का उद्देश्य त्रिपुरा के संदर्भ पर विशेष ध्यान देने के साथ शहरी और ग्रामीण दोनों सेटिंग्स में उच्च शिक्षा के छात्रों के बीच राजनीतिक सामाजीकरण पैटर्न का पता लगाना और उसका विश्लेषण करना है। राजनीतिक सामाजीकरण एक जटिल प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति राजनीतिक विश्वास, दृष्टिकोण और मूल्य प्राप्त करते हैं। शैक्षिक वातावरण इन राजनीतिक अभिविन्यासों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच अंतर की जांच करके, यह अध्ययन त्रिपुरा में उच्च शिक्षा के छात्रों के राजनीतिक सामाजीकरण में योगदान देने वाले अनूठे पहलुओं को उजागर करना चाहता है। निष्कर्षतः शहरी और ग्रामीण परिवेश किस तरह

त्रिपुरा में उच्च शिक्षा के छात्रों के राजनीतिक सामाजीकरण को आकार देते हैं। प्रमुख कारकों और पैटर्न की पहचान करके, नीति निर्माता और शिक्षक नागरिक शिक्षा को बढ़ाने और नागरिकों की भौगोलिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना उन्हें जागरूक और सक्रिय बनाने के लिए रणनीति विकसित कर सकते हैं।

मैथिल्डे एम. वैन डिटमार्स और फैब्रीज़ियो बर्नार्डीफैब्रीज़ियो बर्नार्डी(2023) ने वयस्कता में राजनीतिक समाजीकरण, माता–पिता का अलगाव और राजनीतिक विचारधारा,शीर्षक पर अध्ययन किया। पिछले दशकों में तलाक की दरों में वृद्धि दो–माता–पिता वाले परिवार की पारंपरिक छवि को चुनौती देती है क्योंकि नए परिवार के रूप तेजी से आम होते जा रहे हैं। फिर भी परिवार का पारंपरिक दृष्टिकोण राजनीतिक सामाजीकरण अनुसंधान के लिए केंद्रीय बना हुआ है। इसलिए, हम राजनीतिक सामाजीकरण की प्रक्रियाओं के लिए माता–पिता के अलगाव के परिणामों के बारे में एक सैद्धांतिक रूपरेखा का प्रस्ताव करते हैं और उसका अनुभवजन्य परीक्षण करते हैं। जबकि समाजशास्त्रियों द्वारा माता–पिता के तलाक के प्रभाव का बड़े पैमाने पर अध्ययन किया गया है, इस प्रभावशाली जीवन घटना के राजनीतिक निहितार्थ काफी हद तक उजागर हुए हैं। विश्लेषणों में आर्थिक अभाव और एकल–माँ सामाजीकरण के तंत्र के लिए अनुभवजन्य समर्थन पाते हैं। हमारे निष्कर्षों के निहितार्थ यह हैं कि पारिवारिक राजनीतिक सामाजीकरण प्रक्रिया में, संतानों के राजनीतिक झुकाव न केवल उनके माता–पिता की विचारधारा से प्रभावित होते हैं, बल्कि पारिवारिक संरचना से उत्पन्न होने वाले प्रारंभिक अनुभवों से भी प्रभावित होते हैं।

मैथिल्डे एम. वैन डिटमार्स (2023)ने अपने अध्ययन, ''राजनीतिक लैंगिक अंतर और वाम–दक्षिणपंथी विचारधारा का अंतर–पीढ़ीगत संचरण'' मे बताया की जबकि पश्चिमी यूरोप में राजनीतिक विचारों को अलग करने के लिए वाम और दक्षिणपंथी मुख्य शब्द हैं, नागरिकों के पारिवारिक सामाजीकरण का अध्ययन मुख्य रूप से इन वैचारिक ब्लॉकों के साथ पहचान के बजाय पक्षपातपूर्ण प्राथमिकताओं के संदर्भ में किया गया है। अध्ययन राजनीतिक सामाजीकरण प्रक्रियाओं में वामपंथी और दक्षिणपंथी विचारधारा के संचरण के बीच अंतर करने के महत्व पर प्रकाश डालता है। इसके अलावा, यह दर्शाता है कि माता–पिता और संतानों की पीढ़ियों के भीतर और उनके बीच लिंग अंतर प्रदर्शित करने वाले लक्षणों के अंतर–पीढ़ी संचरण का अध्ययन करते समय संतान के लिंग के आधार पर भेद करना अनिवार्य है। निष्कर्ष राजनीतिक सामाजीकरण प्रक्रिया में विशेष रूप से महिला संतानों की सक्रिय भूमिका की ओर इशारा करते हैं, क्योंकि वे परिवार के बाहर के प्रभावों से अधिक दृढ़ता से प्रभावित होती हैं जो आगे लिंग पुनर्संरेखण की पीढ़ीगत प्रक्रियाओं को बनाए रखती हैं।

टुडोरोइउ, थियोडोर और रामलोगन ने अमांडा आर के साथ मिलकर "बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव में चीन के राजनीतिक अभिजात वर्ग के अंतर्राष्ट्रीय समाजीकरण" (2020) पर अध्ययन किया। यह पुस्तक तर्क देती है कि बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव भागीदार राज्यों के राजनीतिक अभिजात वर्ग का चीन का अंतर्राष्ट्रीय सामाजीकरण चीन की वर्तमान विदेश नीति का एक अत्यंत प्रभावी साधन है। यह दर्शाता है कि कैसे बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव से संबंधित सामाजीकरण की प्रक्रिया लक्ष्य अभिजात वर्ग के बीच चीनी अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की वैधता और इसलिए स्वीकार्यता में आम विश्वास पैदा करती है और कैसे इन अभिजात वर्ग द्वारा निषिद्ध राज्यों की नीतियाँ और कार्य चीनी समाजीकरणकर्ता द्वारा 'सिखाए गए' मानदंडों से जुड़ जाते हैं। यह बताता है कि यह कैसे चीन की सरकार और राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर नागरिकों के हितों की सेवा करता है; और कैसे बीजिंग के अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के संस्करण के लिए परिणामी बढ़े हुए समर्थन ने एक धर्मी चक्र बनाया है जो चीन की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति और क्षमता को और बढ़ाता है।

3. शोध अंतराल

आज तक राजनीतिक सामाजीकरण पर किए गए शोध में, किसी विशेष समूह या समूहों के राजनीतिक सामाजीकरण का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। प्रासंगिक समूह किसी विशेष क्षेत्र, जाति, धर्म, आयु वर्ग या लिंग से संबंधित प्रतीत होते हैं। और उनके राजनीतिक विचारों के आधार पर, ऐसा लगता है कि राजनीतिक–सामाजीकरण की भविष्यवाणी की जाती है। प्रस्तुत शोध **स्नातक स्तर के विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के राजनीतिक सामाजीकरण** में क्या अन्तर है या वे इस प्रक्रिया को किस प्रकार गतिशील बना रहे हैं? इसका अध्ययन इस शोध में किया गया हैं। इसी प्रकार, शोध के लिए चुने गए क्षेत्र में ऐसा कोई शोध अभी तक शोधकर्त्री के संज्ञान में नहीं आया है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि यह शोध अन्य शोधों की तुलना में अपनी विशिष्टता दर्शाता है तथा शोध में निश्चित रूप से अंतराल है।

4. समस्या कथन :–

स्नातक स्तर के विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के राजनीतिक सामाजीकरण का तुलनात्मक अध्ययन

5. शोध का महत्व :–

राजनीतिक सामाजीकरण एक प्रमुख प्रभावी प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों को राजनीतिक सामाजीकरण के विभिन्न एजेंटों के साथ बातचीत के माध्यम से अपनी राजनीतिक दुनिया को समझने में सक्षम बनाती है। इसके अतिरिक्त राजनीतिक सामाजीकरण विद्यार्थियों को कई राजनीतिक मामलों के संबंध में विवेक को नियंत्रित करना सीखाता है।

राजनीतिक सामाजीकरण बताता है कि कैसे लोग राजनीतिक व्यक्तित्व, मूल्य और व्यवहार बनाते हैं, जो जीवन भर निर्धारित रहते हैं। राजनीतिक सामाजीकरण व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह विद्यार्थियों को राजनीतिक विचार विकसित करने और राजनीतिक मूल्य प्राप्त करने की अनुमति देता है। यह प्रक्रिया महत्वपूर्ण है क्योंकि यह राजनीतिक संस्कृति और शक्ति को कैसे तैयार किया जाता है, इसकी अतिरिक्त समझ की अनुमति देता है। विशिष्ट राजनीतिक दलों पर विभिन्न विचारधाराओं की पहचान और विभिन्न सरकारी कार्यों की धारणा समाज को राजनीतिक सामाजीकरण सरकार और सराहनीय पुलिस अधिकारियों जैसे समझदार लोगों के साथ जोड़ता है। राजनीतिक सामाजीकरण का उद्देश्य विद्यार्थियों को इस तरीके से प्रशिक्षण और विकास देना है कि वह राजनीतिक समुदाय के सुकार्यकारी सदस्य बन सके।

राजनीतिक सामाजीकरण क्या भूमिका निभा सकता है और वह इसे कैसे या किसी प्रकार निभा सकता है तथा इसके लिए किन–किन अभिकरणों की आवश्यकता इसमें पढ़ सकती है? यह जानने का प्रयास करने के लिए इस अध्ययन की आवश्यकता शोधार्थी द्वारा महसूस की गई।

6.0 शोध मे प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली

व्यावसायिक पाठ्यक्रम

एक व्यावसायिक पाठ्यक्रम व्यावहारिक कार्य पर केंद्रित होता है, जो छात्रों को किसी विशेष व्यापार या कुशल पेशे के लिए तैयार करता है। व्यावसायिक पाठ्यक्रम किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित विशेष ज्ञान और कौशल प्रदान करने के लिए डिजाइन किए जाते हैं।

प्रशिक्षणार्थी

प्रशिक्षण लेने वाला व्यक्ति या किसी क्षेत्र विशेष की व्यवहारिक रूप से शिक्षा लेने वाला व्यक्ति प्रशिक्षणार्थी होता हैं।

स्नातक स्तर

वर्तमान अध्ययन में स्नातक स्तर से अभिप्रायः जब विद्यार्थी किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय में व्यावसायिक पाठ्यक्रम अथवा सामान्य पाठ्यक्रम में डिग्री के लिए कक्षा 10+2 उत्तीर्ण करने के पश्चात् प्रवेश लेता हैं।

राजनीतिक समाजीकरणः–

राजनीतिक सामाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है जिसके माध्यम से व्यक्तियों को राजनीतिक संस्कृति में प्रेरित किया जाता है ताकि राजनीतिक वस्तुओं के प्रति उनका रुझान बने। पड़ोसियों, समुदाय के साथी सदस्यों के साथ व्यवहार करना, राजनीतिक मुद्दों और घटनाओं में रुचि लेना आदि।

7.0 उभरते हुए शोध प्रश्नः–

1. राजनीतिक सामाजीकरण क्या है?
2. राजनीतिक सामाजीकरण के प्रति विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थी किस प्रकार की अभिवृत्ति रखते हैं?

8. प्रस्तावित अध्ययन के उद्देश्य :–

1. राजनीतिक सामाजीकरण में लिंग भेद के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना ।
2. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की भिन्नता के आधार पर राजनीतिक सामाजीकरण के ज्ञानात्मक पक्षों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

9. अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाएं की गई है –

H_0^1 राजनीतिक सामाजीकरण में लिंग भेद के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

H_0^2 व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की भिन्नता के आधार पर राजनीतिक सामाजीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

10. शोध में प्रयुक्त चर :

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित चरों का अध्ययन किया गया है –

स्वतंत्र चर :

- व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के प्रशिक्षणार्थी ।

आश्रित चर :

- राजनीतिक समाजीकरण

11. शोध आकल्प :–

शोध में शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

12. न्यादर्श एवं न्यादर्श तकनीक :–

प्रस्तुत शोध के लिए न्यादर्श के रूप में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के व्यावसायिक पाठ्यक्रम में संलग्न महाविद्यालय जिसमें सरकारी एवं निजी क्षेत्र के महाविद्यालय ब इसमें प्रत्येक क्षेत्र से 50 विद्यार्थियों को जिसमें 25 छात्र एवं 25 छात्राएं सम्मिलित होगी। महाविद्यालय के दो क्षेत्र कानून एवं पॉलेटेक्निक के विद्यार्थियों को न्यादर्शन के लिए लिया गया है। न्यादर्शन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया।

13. शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु दत्त संकलन का कार्य स्वयं पर्यवेक्षक के निर्देशन में निम्न उपकरण द्वारा किया गया :–

1. राजनीतिक सामाजीकरण का स्वनिर्मित परीक्षण।

इसको चार भागों में बांटा गया हैं : राजनीतिक ज्ञान, राजनीतिक रुचि, राजनीतिक अभिवृत्ति और राजनीतिक सहभागिता।

14. शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

शोधार्थी वर्तमान शोध कार्य के लिए न्यादर्श से आँकड़े एकत्रित करेगा, इन आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने के लिए सामान्य सांख्यिकीय तकनीकी का प्रयोग किया जाएगा :–

1. मध्यमान
2. प्रमाणिक विचलन
3. टी–परीक्षण

15. शोध का परिसीमनः–

किसी भी शोध कार्य की गहनता एवं सूक्ष्मता की दृष्टि से शोध कार्य की सीमा निर्धारण करना आवश्यक है ताकि शोधकर्ता विषय/उद्देश्यों से अन्यत्र न भटक जाए।

प्रस्तुत शोध हेतु निम्न प्रकार सीमा निर्धारण किया गया हैं :–

समयाभाव के कारण वर्तमान शोध प्रबंध को निम्न परिसीमाएं दी गई है –

1. प्रस्तुत शोध प्रबन्ध जयपुर जिलें के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत 100 प्रशिक्षणार्थियों तक ही सीमित रखा गया हैं।
2. प्रस्तुत शोध प्रबन्ध जयपुर जिले के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों दो क्षेत्रों कानून एवं पॉलीटेक्निक तक ही सीमित रखा गया हैं।

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1s
January 2025
ISSN 2229-3388

16. प्रदतों का विश्लेषणः—

परिकल्पना H_0^1 :—

राजनीतिक सामाजीकरण में लिंग भेद के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी संख्या 1.1

स्नातक स्तर के विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रा एवं छात्र प्रशिक्षणार्थियों के राजनीतिक सामाजीकरण के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—मान

लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी— मान
छात्राऍं	50	181.78	15.83	1.022
छात्र	50	178.29	18.10	

आरेख संख्या 1.1

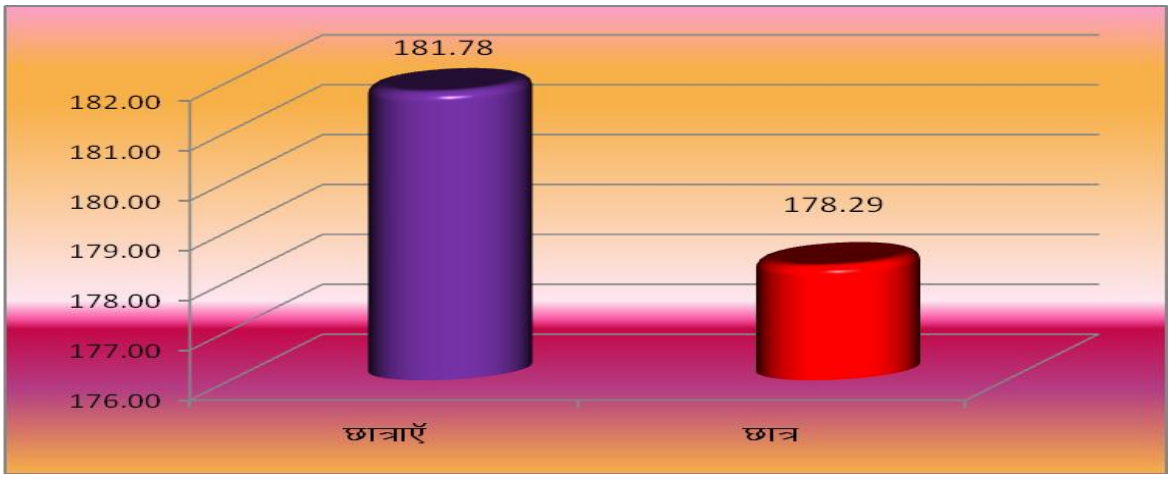

स्नातक स्तर के विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रा एवं छात्र प्रशिक्षणार्थियों के राजनीतिक सामाजीकरण के प्राप्तांकों के मध्यमान

उपरोक्त सारणी एवं आरेख संख्या 1.1 से परिलक्षित होता हैं कि स्नातक स्तर के विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं के राजनीतिक सामाजीकरण प्रमापनी के प्राप्तांकों का मध्यमान 181.78 एवं मानक विचलन प्राप्त हुआ जबकि स्नातक स्तर के विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों के राजनीतिक सामाजीकरण प्रमापनी के प्राप्तांकों का मध्यमान 178.29 एवं मानक विचलन प्राप्त हुआ। दोनों के मध्यमानों की तुलना करने पर ज्ञात हुआ कि छात्राओं के राजनीतिक सामाजीकरण प्रमापनी के प्राप्तांकों का मध्यमान, छात्रों के राजनीतिक सामाजीकरण प्रमापनी के प्राप्तांकों के मध्यमान से कुछ अधिक हैं। दोनों के मध्यमानों की तुलना से प्राप्त टी—मान 1.022 का मान सैद्धान्तिक टी—मान सारणी के 1.98 से कम हैं। अतः स्नातक स्तर के विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रा एवं छात्र प्रशिक्षणार्थियों के राजनीतिक सामाजीकरण के प्राप्तांकों के मध्यमानों में लिंग भिन्नता के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसलिए परिकल्पना H_0^1 स्वीकृत की जाती हैं।

परिकल्पना H_0^2 :–

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की भिन्नता के आधार पर राजनीतिक सामाजीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी संख्या 1.2

स्नातक स्तर के कानून एवं पॉलीटेक्निक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के राजनीतिक सामाजीकरण के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

व्यावसायिक पाठ्यक्रम	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी– मान
कानून के प्रशिक्षणार्थी	50	181.12	14.00	0.656
पॉलीटेक्निक के प्रशिक्षणार्थी	50	178.88	19.69	

आरेख संख्या 1.2

स्नातक स्तर के कानून एवं पॉलीटेक्निक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के राजनीतिक सामाजीकरण के प्राप्तांकों के मध्यमान

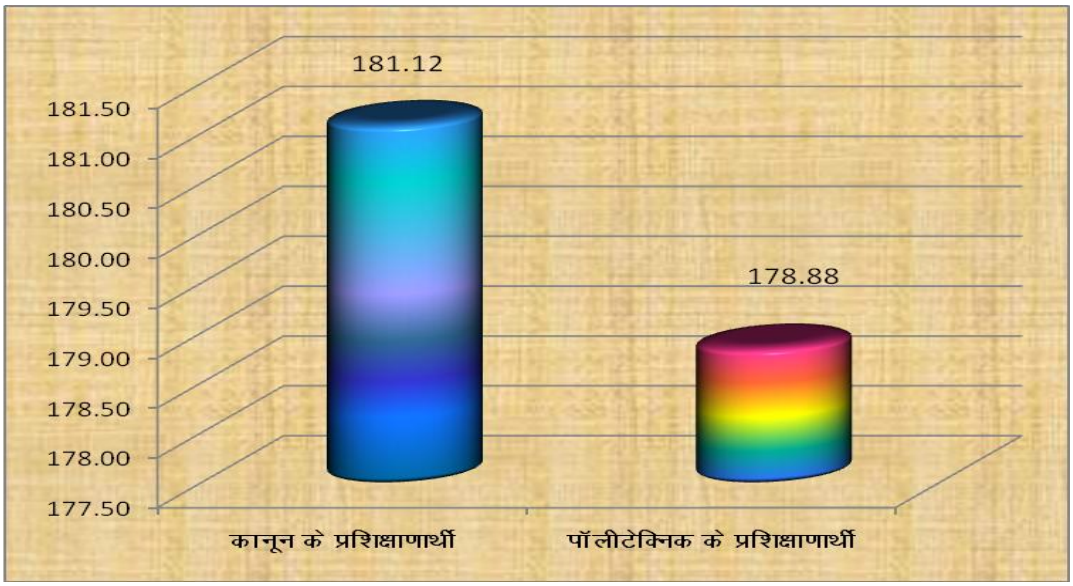

उपरोक्त सारणी एवं आरेख संख्या 1.2 से स्पष्ट होता हैं कि स्नातक स्तर के कानून व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के राजनीतिक सामाजीकरण प्रमापनी के प्राप्तांकों का मध्यमान 181.12 एवं मानक विचलन प्राप्त हुआ जबकि पॉलीटेक्निक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के राजनीतिक सामाजीकरण प्रमापनी के प्राप्तांकों का मध्यमान 178.88 एवं मानक विचलन प्राप्त हुआ। दोनों के मध्यमानों की तुलना करने पर ज्ञात हुआ कि कानून व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के राजनीतिक सामाजीकरण प्रमापनी के प्राप्तांकों का मध्यमान, पॉलीटेक्निक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के राजनीतिक सामाजीकरण प्रमापनी के प्राप्तांकों के मध्यमान से कुछ अधिक हैं। दोनों के मध्यमानों की तुलना से प्राप्त टी–मान 0.656 का मान सैद्धान्तिक टी–मान सारणी के 1.98 से कम हैं। अतः कानून एवं पॉलीटेक्निक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के प्राप्तांकों के मध्यमानों में व्यावसायिक पाठ्यक्रम भिन्नता के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसलिए परिकल्पना H_0^2 स्वीकृत की जाती हैं।

17. निष्कर्ष

शोध से प्राप्त निष्कर्ष निम्न हैं:–

H_0^1 राजनीतिक सामाजीकरण में लिंग भेद के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

H_0^2 व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की भिन्नता के आधार पर राजनीतिक सामाजीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] एंथनी गिडेंस'एसबीसी/ओ/ओजी (1989), पॉलिटी प्रेस, बटलर एंड टैनर लिमिटेड, ग्रेट ब्रिटेन, पृ.60 ।

[2] गुप्ता, सुमन और रानी, सीमा (2023) 'शहरी और ग्रामीण उच्च शिक्षा के छात्रों के बीच राजनीतिक सामाजीकरण पैटर्न का विश्लेषण' विज्ञान, संचार और प्रौद्योगिकी में उन्नत अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल (प्श्त्ब्) अंतर्राष्ट्रीय ओपन–एक्सेस, डबल–ब्लाइंड, पीयर–रिव्यू, रेफरी, मल्टीडिसिप्लिनरी ऑनलाइन जर्नल वॉल्यूम 3, अंक 2।

[3] लुसियन, डब्ल्यू. पाई और सिडनी,वर्बा (संपादित)(1972), राजनीतिक संस्कृति और राजनीतिक विकास, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, प्रिंसटन, पृ. 15 ।

[4] मैथिल्डे, एम. वैन डिटमार्स और फैब्रीज़ियो बर्नार्डीफैब्रीज़ियो बर्नार्डी (2023) वयस्कता में राजनीतिक समाजीकरण, माता–पिता का अलगाव और राजनीतिक विचारधारा,फ्रंट. पॉलिट. साइंस, खंड 5. https://doi.org/10.3389/fpos.2023.1089671 A

[5] मैथिल्डे, एम. वैन डिटमास (2023), राजनीतिक लैंगिक अंतर और वाम–दक्षिणपंथी विचारधारा का अंतर–पीढ़ीगत संचरण. यूरोपियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल रिसर्च खंड 62, अंक 1पृष्ठ 3–24।